9. इन्टरवेन्शनल रेडियोलोजी

- वर्तमान में रेडियोडायग्नोसिस विभाग में रेडियो से संबंधित जॉचें एवं उपचार नवीन तकनिकियों से होने लगी है, इससे मरीज की सहीं एवं सुक्ष्म से सुक्ष्म बीमारी का समय पर पता कर उसी समय उपचार किया जाता है। महाविद्यालय में वर्तमान में इन नवीन तकनिकियों से जॉच एवं उपचार का कार्य रेडियोडायग्नोसिस विभाग में ही किया जाता है। देश के प्रतिष्ठित संस्थाओं में यह कार्य एन.एम.सी. द्वारा बनाई गई नवीन विशिष्ठता "इन्टरवेंशन रेडियोलोजी" में किया जाता है। इस नवीन विभाग के होने से सही प्रशिक्षित चिकित्सकों के नेतृत्व में मरीज की कैंसर जैसी भयावह बीमारी का पता चलते ही इस तरह की बीमारी का प्रारम्भिक स्तर से ही उसी समय उपचार प्रारम्भ किया जा सकेगा। इस विभाग हेतु आवश्यक मशीनें यथा अल्ट्रा सोनोग्राफी, डीएसए, सीटी स्केन, एमआरआई मशीनें एवं रेडियो फ्रिक्वेन्सी एबीयेशन जैसी महत्वपूर्ण मशीनें विभाग में उपलब्ध है। एवं भविष्य में इस विषय में डीएम० कोर्स भी प्रारम्भ किया जा सकता है।

इन्टरवेन्शनल रेडियोलोजी

10. मेटरनल फीटल मेडिसिन एण्ड पेरिनेटोलोजी डिविजन

- प्रसूति रोग की जटिलताओं में से प्रत्याशित बेहद जोखिम वाले प्रकरणों में माता एवं भ्रूण की सुरक्षा के प्रकरण इसी "मेटरनल फीटल मेडिसिन एण्ड पेरिनेटोलोजी डिविजन में ही संधारित किये जाते है। ऐसे प्रकरणों की संख्या हाल ही के वर्षों में अधिक हुई है। हाईपरटेंशन, प्री–इक्लेम्पिशिया, हृदय रोग, थ्रोम्बोपीनिया, ऐपीलेप्सी, लम्बि अवधि तक दवाईयॉ लेना इत्यादी बीमारियों वाली माताओं में ऐसी जटिलतायें हो सकती है। वर्तमान में इस प्रकार के प्रकरणों हेतु कोई पृथक से डिविजन नहीं होने से ऐसे प्रकरणों का सही समय पर पता लगाया जाना संभव नहीं हो पा रहा है। यदि यह डिविजन पृथक से बना दिया जाता है तो समय से पूर्व ही ऐसे जटिल प्रकरणों में भी, भ्रुण एवं माता दोनो की विशेष जॉच एवं उपचार से सुरक्षित प्रसव बेहद आसान तरीके से किये जा सकेगे।

मेटरनल फीटल मेडिसिन एण्ड पेरिनेटोलोजी डिविजन

11. रिप्रोडक्टिव मेडिसिन

- इस नवीन अतिविशिष्ठता विभाग का मुख्य लक्ष्य पुरूष एवं महिलाओं में प्रजनन प्रणाली/रिप्रोडक्टिव सिस्टम को सुधारना या बनाए रखना है साथ ही लोगों को यह विकल्प देना की वे कब और कैसे बच्चे पैदा करने का फैसला करते है।
- वर्तमान में यह विभाग देश के प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थाओं में पृथक रूप से चालू है, परन्तु इस महाविद्यालय में अभी यह विभाग प्रारम्भ नहीं किया गया है।
- यदि राज्य सरकार यह विभाग प्रारम्भ करती है तो इस विषय एवं इससे जुड़ी हुई हर समस्या के बारे में महिला एवं पुरूषों में जागरूकता, काउन्सिलिंग एवं समस्याओं का निराकरण बेहतर चिकित्सकी तरीके से किया जा सकेगा एवं भविष्य में इस विषय में डी0एम0 कोर्स भी प्रारम्भ किया जा सकता है।

12. क्रिटिकल केयर मेडिसिन

- वर्तमान में सवाई मानसिंह चिकित्सालय में 380 आई.सी.यू. बैड्स है एवं इन बैड्स पर माजूद मरीजों को जिस विभाग/ईकाई के चिकित्सको को द्वारा इन्हे भर्ती किया जाता है, उनके द्वारा ही इनकी देखभाल की जाती है, इससे इन बेहद गम्भीर मरीजों को इन चिकित्सकों द्वारा अपने वार्ड एवं ओपीडी में कार्य देखने के कारण पूर्ण रूप से समय देकर देख पाना संभव नहीं है।
- वर्तमान में देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में इन आईसीयू के गंभीर मरीजों की पूर्ण/डेडीकेटेड देखभाल हेतु "क्रिटिकल केयर मेडसिन" अतिविष्ठिता के चिकित्सक उपलब्ध होते है।
- इसी तर्ज पर इस महाविद्यालय में एक नवीन "क्रिटिकल केयर मेडिसिन" अतिविष्ठिता विभाग गठित कर भविष्य में इसमें डी.एम. पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जा सकता है। इससे इस महाविद्यालय के आईसीयू के गंभीर मरीजों को पूर्ण/डेडीकेटेडली देखभाल हेतु प्रशिक्षित चिकित्सक उपलब्ध हो सकेगें।

13. एण्ड्रोलोजी डिविजन

- वर्तमान में पुरूष बांझपन एवं यौन रोगों की समस्या पुरूषों में बहुत अधिक होने लगी है। बहुत से पुरूष रोगी जानकारी एवं अपर्याप्त चिकित्सा सुविधा के कारण इस बीमारी से समय पर जॉच एवं उपचार नहीं करवा पाते है।
- इस बीमारी के जॉच, उपचार इत्यादि के लिये देश के प्रतिष्ठित संस्थाओं में एण्ड्रोलोजी डिविजन, यूरोलोजी विभाग के अधीन कार्यशील है। यह डिविजन इस रोग के बचाव, जॉच, उपचार, यौन शिक्षा, यौन काउन्सिलिंग एवं थैरेपी, एण्ड्रोपोज उपचार, एआरटी/आईवीएफ सेन्टर्स पर स्पर्म रिट्राईवल प्रकिया एवं जागरूकता का डेडिकेटेड कार्य करती है।

एण्ड्रोलोजी डिविजन